International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 41-43

डॉ0 धर्मवीर भारती के उपन्यासों में प्रेम कथा चित्रण

सोनिया राठी

एम.ए.(स्वर्ण पदक विजेता), यु.जी.सी.नेट, एम.फिल,
प्रवक्ता, कोशिश कॉलेज, बेंगलोंर, कर्नाटक, भारत।

सारांश
डॉ0 धर्मवीर भारती के समकालीन उपन्यासकारों में प्रमुख रूप से अज्ञेय जी, जैनेंद्र कुमार, भगवती चरण वर्मा, यशपाल, इलाचंद्र जोशी आदि प्रमुख हैं। इन सभी उपन्यासकारों का कथ्य व शिल्प भारती जी के कथ्य व शिल्प के अधिक निकट है। इन सभी के उपन्यासों में जीवन के यथार्थ का गहन व वास्तविक चित्रण है। ये प्रगतिवादी समाज के बदलते परिवेश को लेकर आगे बढ़े। उनकी रचनाओं में मार्क्सवाद व फ्रायडवाद का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। डॉ.धर्मवीर भारती के उपन्यासों में पुरानी सामाजिक मान्यताओं एवं प्रगतिवादी समाज की बदली हुई परिस्थितियों से उत्पन्न नवीन मान्यताओं के मध्य संघर्ष की भावभूमि प्रमुखता से विद्यमान है।

मूल शब्द : डॉ0 धर्मवीर भारती, प्रेम कथा

प्रस्तावना
गुनाहों का देवता' उपन्यास का कथानक अत्यंत सरल है। यह उपन्यास भारतीय गयानपीठ प्रकाशन द्वारा 1959 में प्रकाशित किया गया। इसमें संवेदना व भावुकता प्रचुर मात्रा में दिखाई देती है। इसमें एक पुरुष के चारों ओर चार लड़कियों के प्रेम संबंधों को दिखाया गया है। जिसमें दो हिंदू लड़कियां हैं, एक मुस्लिम और एक ईसाई लड़की है। प्रेम के दो दृष्टिकोण दर्शाए गए हैं। जिसमें भारतीय व पाश्चात्य दोनों का वर्णन किया गया है।
इसमें कथानक का नायक चन्दर नामक एक युवक है। वह डॉ. शुक्ला के संरक्षण में शोध कर रहा है। अपने घर से दूर इलाहाबाद में रहता है। डॉ.शुक्ला की एक चंचल व शरारती बेटी है। जिसका नाम सुधा है। चन्दर और सुधा एक दूसरे को प्रेम करते हैं। वह अपने प्रेम को कोई नाम नहीं देना चाहते। वह प्रेम को आर्दश मान कर उसे शारीरिक आर्कषण से दूर रखना चाहते हैं। उनके मन में उठती भावना व वासना में द्वंद्व दिखाया गया है। वह एक दूसरे से दूर होकर भी एक दूसरे को भूल नहीं पाते और कुण्ठित हो जाते हैं। चन्दर जब तक सुधा के सान्निध्य में रहता है तब तक देवत्व के पद पर आसीन रहता है उससे दूर होने के बाद एक के बाद एक गुनाह करता चला जाता है। अंत में गुनाहों का देवता बन जाता है।

> *"जो शरीर और आत्मा को अलग कर देता है वही मन के भयंकर तूफानों में उलझकर चूर–चूर हो जाता है।"* [1]

सुधा चन्दर के समझाने पर विवाह कर लेती है किन्तु यह उसके लिए अत्यंत पीड़ादायक स्थिति थी। वह प्रेम चन्दर से करती थी व समर्पण किसी को करने जा रही थी। अपनी इस पीड़ा को वह अधिक समय तक सहन न कर सकी अन्तिम समय तक उसके होठों पर चन्दर का ही नाम था। अगले जन्म में उससे मिलने की कामना उसके मन में रहती है।

> *"आदमी एक दुसरे को समझे, बुझे, प्यार के तब ब्याह के भी कोई माने हैं।"* [2]

सुधा के विवाह के पश्चात चन्दर का मन भटकने लगता है उसे महसूस होता है कि सुधा की उसके जीवन में एक अहम भूमिका थी। अब वह उसे भूल नहीं पाता। सुधा को भूलने के लिए वह पम्मी नामक एंग्लो इंडियन स्त्री की ओर आकर्षित होता है। पम्मी अपने पति से अलग रहती थी। पम्मी सैक्स को ही सब कुछ मानती थी। चन्दर को पम्मी के साथ सुख का एहसास होता है। किन्तु उनका संबंध अधिक दिनों तक नहीं टिक सका। दोनों शारीरिक रूप से एक दूसरे के करीब थे किन्तु मानसिक रूप से एक दूसरे से दूर थे। पम्मी को अपने वैवाहिक जीवन की गलतियों का एहसास हुआ और वह अपने पति के पास लौट गई।

> *"अध्यात्मिक प्रेम में प्यासे रह जाने वाले अभाव फिर किसी मांसल बंधन में ही आकर बुझ पाते है।"* [3]

तीसरी लड़की जो चन्दर के जीवन में आती है वह बिनती है। बिनती सुधा की बुआ की लड़की है। गांव से जब वह सुधा के पास रहने आई तब उसने सुधा व चन्दर के संबंधों को निकट से देखा। दोनों के एक दूसरे के प्रति प्रेम व त्याग को देखकर वह चन्दर का मन ही मन सम्मान करती है। चन्दर को देवता मानती है। गांव में रहने व पली बढ़ी होने पर भी वह विवाह के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण रखती है। वासना को वह सहज व स्वाभाविक मानती है। सुधा व चन्दर को जब वह टूटते हुए और बिखरते हुए देखती है, वह उन दोनों के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाती हैं। अंत में चन्दर आदर्श और निकृष्ट प्रेम से मुक्ति पा कर बिनती से ही सहज स्वाभाविक संबंध स्थापित करता है।
'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास 1949 में लिखा गया। यह एक रोमानी उपन्यास है। जिसमें प्रेम भावना व्यक्त की गई है। भारतीय समाज में प्रेम भावना मानव के जीवन में वैयक्तिक न रह कर आर्थिक स्थिति पर अधिक निर्भर हो गई। आर्थिक ढांचा खोखला होने के कारण बेमेल विवाह, टूटते परिवार और खंडित प्रेम की समस्या समाज में उत्पन्न हो गई। मध्यम वर्गीय परिवार से संबंध होने के कारण भारती जी ने समाज में फैली इन समस्याओं को करीब से देखा। असफल प्रेम व समाज में व्याप्त विवशता, निराशा ने भारती जी के मन को दुखी किया। आर्थिक विषमता मानव की इच्छाओं व कामनाओं का दमन कर देती है। यदि कुछ उम्मीद बचती है उसे रूढ़ियां, परम्पराएं, मर्यादा के नाम पर समाज उसे भी

नहीं छोड़ता है। मध्यवर्गीय समाज में आर्थिक रूप से कमजोर पुरुष व स्त्री को प्रेम करने का अधिकार नहीं है। समाज में प्रेम का अधिकार आर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्ति को ही है।

इस उपन्यास के कथानक में परिस्थितियों से उत्पन्न बेचैनी और संघर्ष के बीज दृष्टिगत होते हैं। यह उपन्यास प्रेम के अलग–अलग पहलुओं को पाठक के सामने उघाड़ता चलता है। भारती जी ने स्वयं तटस्थ रहने के लिए अपने उपन्यास में मणिक मुल्ला नामक पात्र की सृष्टि की। यही पात्र सभी कहानियां सुनाता है। ये कहानियां उससे सम्बंधित हैं। उसके जीवन में जितनी भी स्त्रियां आती हैं, उन सब के प्रति उसके मन में आकर्षण होता है। अपनी भावनाओं के अभिव्यक्ति का साहस उसमें नहीं उत्पन्न हो पाता। मणिक मुल्ला को निम्न मध्य वर्गीय विसंगतियों को भुगतना पड़ता है। कहीं वह पलायन करता है, कहीं आर्थिक परिस्थितियां उसके मार्ग में बाधा बन जाती हैं। उसके हर प्रेम प्रसंग के पीछे समाज का घिनौना चेहरा छिपा है। भारती जी ने उसे एक असफल प्रेमी की तरह चित्रित किया है। वह जीवन में ठोकरें खा–खा कर सिखता है।

> *"खैर, तो मणिक मुल्ला बोले कि, जब मैं प्रेम पर आर्थिक प्रभाव की बात करता हूं तो मेरा मतलब यह रहता है कि वास्तव में आर्थिक ढांचा हमारे मन पर इतना अजब सा प्रभाव डालता है कि मन की सारी भावनाएं उससे स्वाधीन नहीं हो पाती।"* [4]

इस उपन्यास में मणिक मुल्ला की तीन प्रेम कहानियों को सात दुपहरियों में दिखाया गया है। यहां तीन स्त्रियों से जुड़ी घटनाओं का वर्णन किया गया है। ये तीन स्त्रियां हैं–जमुना, लिली, और सत्ती। प्रेम इन तीनों स्त्रियों को कहां से कहां ले जाता है। तीनों की कहानी में प्रेम की परिभाषा बदल जाती है। पहली स्त्री जमुना से जुड़ी कहानी में जमुना एक मध्यम वर्गीय परिवार की लड़की है। उसके पिता बैंक में साधारण से क्लर्क थे। उसके पिता उसके लिए दहेज नहीं जुड़ा पाते। जिस कारण जमुना की उम्र बढ़ती जाती है। जमुना अपने पड़ोस के लड़के तन्ना से विवाह करना चाहती थी। तन्ना भी जमुना को पसंद करता था। मगर अपने पिता के डर से कुछ बोल नहीं पाता। जमुना रो–धो कर अपने माता–पिता को अपने से नीचे गोत्र वाले लड़के तन्ना से विवाह के लिए मना लेती है। किंतु दोनों परिवारों का जातिगत अहंकार उनके जीवन को नष्ट कर देता है। जमुना और तन्ना का अपने समाज, परिवार और रूढ़ियों से विद्रोह करना नहीं दिखाया गया। वे अपने परिवार से असहमति जताते हुए भी नहीं दिखाई देते। मणिक मुल्ला जमुना से पांच वर्ष छोटे थे। जमुना मणिक के साथ बैठ कर समय बिताती थी। वह जमुना के पास भी जाना चाहते थे और उससे दूरी भी बनाए रखना चाहते थे। वह एक पलायनवादी प्रेमी साबित हुए।

> *"इस रूमानी प्रेम का महत्त्व है, पर मुसीबत यह है कि वह कच्चे मन का प्यार होता है, उसमें सपने, इन्द्रधनुष और फूल तो काफी मिकदार में होते हैं पर वह साहस और परिपक्वता नहीं होती जो इन सपनों और फूलों को स्वस्थ सामाजिक सम्बन्ध में बदल सके।"* [5]

जमुना की शादी उसकी पिता के उम्र के व्यक्ति के साथ हो गई। उसे धन–संपत्ति मिल गई किन्तु शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति व पुत्र कामना उसे रामदीन नामक तांगेवाले के समीप ले गई। जमुना अपनी परिस्थितियों से समझौता कर लेती है। जमुना के नैतिक पतन का जिम्मेदार कौन है? हमारे समाज का आर्थिक ढांचा अथवा हमारे समाज से जुड़ी जातिवाद परंपराएं। यहां उपन्यास में जमुना का अपने भाग्य के साथ समझौता करना पाठक के मन में उसके प्रति सहानुभूति उत्पन्न करता है। दहेज की विकराल समस्या ने समाज में अनेक लड़कियों का जीवन नष्ट किया। इसी के कारण बेमेल विवाह और अनैतिक संबंधों की समस्या उत्पन्न होती है।

मणिक मुल्ला की दूसरी कहानी लिली से जुड़ी है। लिली पिता विहिन संपन्न मां की इकलौती संतान थी। लिली और मणिक मुल्ला दोनों एक दूसरे को चाहते थे किन्तु कभी अपनी भावनाओं को व्यक्त न करने के कारण लिली की शादी तन्ना से हो जाती है। लिली का तन्ना से अधिक पढ़ी–लिखी होने के कारण उनमें सामंजस्य नहीं बैठ पाता। लिली के व्यक्तित्व में नई शिक्षा का प्रभाव था। लिली और तन्ना प्रेम ना मिल पाने के कारण अधूरा जीवन जी रहे थे। उनके मध्य पति–पत्नी जैसी कोई बात नहीं थी। तन्ना को लगता कि लिली उसे नीचा दिखाना चाहती है। तन्ना के दब्बू स्वभाव के कारण लिली उसे छोड़कर चली जाती है।

> *"तन्ना की जिन्दगी अजब सी थी। पत्नी ज्यादा पढ़ी थी, ज्यादा धनी घर की थी, ज्यादा रूपवती थी, हमेशा ताने दिया करती थी।"* [6]

उपन्यास की तीसरी नारी पात्र सत्ती है। उसका स्वतंत्र व संघर्षशील व्यक्तित्व इस उपन्यास में उभारा गया है। वह एक अनाथ लड़की है। सत्ती शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती, मगर वह नारी सुलभ गुणों से युक्त हैं। उसका लालन–पालन चमन ठाकुर नामक व्यक्ति करता है। सत्ती उसे चाचा कहती है। वह साबुन का व्यापार करती है। हरदम अपने पास चाकू रखती हैं। मणिक मुल्ला उसके प्रति आकर्षित होता है। पर वह उसे कुछ भी कहने का साहस नहीं कर पाता। धीरे–धीरे सत्ती मणिक की ओर आकर्षित होती है। वह उस पर विश्वास करने लगती है। दोनों में मित्रता हो जाती है। वह मणिक की पढ़ाई में सहायता करना चाहती है। उसके चाचा की नीयत में खोट आने पर वह उसे महेसर दलाल से पैसे लेकर सत्ती को उसके पास भेजने को भी तैयार हो जाता है। वह घर से भाग जाती है। वह तब मणिक से सहायता मांगती है। मणिक कायर की भांति उसे उसके चाचा को बुलाकर पकड़वा देता है। अंत में वह भिखारीन के रूप में दिखाई पड़ती है। एक संघर्षशील नारी जिसमें समाज का विद्रोह करने का साहस था। उसकी इस दशा का जिम्मेदार कौन था? मेहनत ओर ईमानदारी से जीने के बावजूद उसकी हालत दरिद्र स्त्री की थी। हर तरफ उसे धोखा ही मिला था जिसके कारण उसे निराश, हताश, और विषाद युक्त जीवन जीना पड़ा। उसकी परिस्थितियां कुछ ऐसी बनी कि वह चारों ओर से अकेली हो गई। काम लोलुप लोगों द्वारा घिरे जाने पर उसे समझौता करना पड़ा।

देशकाल और वातावरण की दृष्टि से 'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास की घटनाएं इलाहाबाद की हैं। इसमें उपन्यासकार छोटे–छोटे अनुभव खंडों के द्वारा कथा को आगे बढ़ाता हैं। वह यहां आख्यान शैली को अपनाते हुए चल रहा है। मणिक मुल्ला अधिकांश कहानियां दोपहर के समय सुनाते थे। वातावरण का चित्रण पात्रों की मनोदशा के अनुकूल उनकी व्यथा, विषाद, और दर्द को भारती जी ने व्यक्त किया। उपन्यास में पात्रों की बेचैनी व निराशा संवादों के माध्यम से व्यक्त की है। संवाद साधारण बोलचाल के हैं। सीधी सरल भाषा का प्रयोग किया गया हैं। उपन्यास में अनपढ़ पात्रों की भाषा अवधि है। मुहावरों व कहावतों का प्रयोग किया गया है। स्थान के अनुसार पात्रों की भाषा अलग है। प्राकृतिक घटनाओं के प्रस्तुतीकरण में अनेक स्थानों पर उपन्यासकार द्वारा बिम्बात्मक भाषा शिल्प का प्रयोग किया है। शैली में परिवर्तन दृष्टिगत होता है कहीं वर्णनात्मक है, कहीं भावात्मक है, कहीं विचारात्मक है। उपन्यास में पात्रों के हृदयोद्गार भावात्मक शैली में व्यक्त किए गए हैं। सामाजिक परंपराओं व मान्यताओं के

औचित्य–अनौचित्य विचारात्मक शैली में व्यक्त किए है। किसी स्थान पर स्वगत कथन आत्म–विश्लेषण शैली में प्रस्तुत किए गए है।

उपसहांर

आलोचकों में भारती जी को प्रेम और रोमांस का रचनाकार माना है। उनके उपन्यासों में प्रेम और रोमांस का यह तत्त्व स्पष्ट रूप से मौजूद है। मध्यवर्गीय प्रेम की सच्चाई को भारती जी ने पूर्णतया अभिव्यक्ति प्रदान करने की कोशिश की। वे इसमें सफल भी हुए । परंतु उसके साथ–साथ इतिहास और समकालीन स्थितियों पर भी उनकी पैनी दृष्टि रही है जिसके संकेत उनकी कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों, आलोचना तथा संपादकीय में स्पष्ट देखे जा सकते हैं। उनकी कहानियों–उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ के चित्र हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. डॉ0 धर्मवीर भारती, गुनहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली–110003।
    1. पृष्ठ संख्या–294।
    2. पृष्ठ संख्या–65।
    3. पृष्ठ संख्या–240।
2. डॉ0 धर्मवीर भारती, सुरज का सातवाँ घोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली–110003।
    4. पृष्ठ संख्या–38।
    5. पृष्ठ संख्या–50।
    6. पृष्ठ संख्या–45।